

આઓ, ખુદ દેખ લો 15

જો પ્યાસા હો



jo pyāsā ho

If Anyone Thirsts

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 15]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org

published and printed by

Good Word, New Delhi

The title cover is derived from
aalmeidah [https://pixabay.com/illustrations/nature-
background-drawing-sketch-7055960/](https://pixabay.com/illustrations/nature-background-drawing-sketch-7055960/).

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:

askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

जो प्यासा हो	3
वह मेरे पास आए	4
जो ईमान लाए	6
वह पिए	7
तब पानी की नहरें बह निकलेंगी	8
मंजूर या मरदूद?	9
इंजील, यूहन्ना 7:37-52	9

एक दिन ईसा मसीह बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। झोंपड़ियों की ईद थी। इस ईद पर लोग कच्ची झोंपड़ियों में रहते थे। यह ईद तालीम देने का अच्छा मौका था।

► **तालीम देने का अच्छा मौका क्यों था?**

यह बात समझने के लिए ज़रूरी है कि हम इस ईद का बुनियादी मक़सद समझ लें।

► **मक़सद क्या था?**

फ़सलों की खुशी। इस ईद पर लोग खुशी मनाते थे कि फ़सलें उग आई हैं। अब फ़सल का खास ताल्लुक बारिश से है। बारिश कम हो तो फ़सल भी कम होगी। इसलिए इस ईद पर लोग दुआ भी करते थे कि आनेवाले साल में बारिशें पढ़ें।

लेकिन साथ साथ वह अल-मसीह की आमद भी याद करते थे।

► **क्यों?**

अल-मसीह के आने का एक निशान कसरत का पानी था। सदियों पहले पेशगोई की गई थी कि उस वक्त बैतुल-मुक़द्दस के नीचे से ज़िंदगी का पानी बह निकलेगा (ज़करियाह 14:8; हिज़कियेल 47:1)।

तब तमाम क्रौमें झोंपड़ियों की ईद मनाने यरुशलम आया करेंगी
(ज़करियाह 14:16)।

गरज़ झोंपड़ियों की ईद पर लोग खासकर दो बातों की खुशी मनाते थे। पहले, इस साल फ़सलों को खूब पानी मिला है। दूसरे, एक दिन हमें ज़िंदगी का पानी भी मिलेगा—उस दिन जब अल-मसीह आएगा।

► ईद के दिन लोग क्या करते थे?

उस दिन इमाम चश्मे से पानी लेकर बैतुल-मुक़द्दस की कुरबानगाह पर उंडेल देता था। साथ साथ लोग मसीहाना ज़माने के बारे में यह पेशगोई दोहराते थे कि

तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी भरोगे।

(यसायाह 12:3)

पानी उंडेलने से यह याद किया जाता था कि खुदा जो पानी देता रहता है एक दिन ज़िंदगी का पानी भी देगा।

अब हम वह कुछ समझ सकते हैं जो उस ईद पर हुआ। ईद के आखिरी दिन ईसा मसीह खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा,

जो प्यासा हो वह मेरे पास आए,
और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए।
कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी।’ (यूहन्ना 7:37-38)

- ईसा मसीह क्या कहना चाहता है?

पहली बातः

जो प्यासा हो

- जो प्यासा है वह किस चीज़ के लिए तड़पता है?
पानी के लिए।

- क्या वह आम पानी के लिए तड़पता है?
नहीं। ईसा मसीह आम पानी की बात नहीं कर रहा।

- फिर क्या?

यह वह पानी है जिसके इंतज़ार में लोग थे—अल-मसीह का पानी,
ज़िंदगी का पानी जो बैतुल-मुक़द्दस से बह निकलेगा। यह वह आस-
मानी पानी है जो अबदी ज़िंदगी दिलाता है।

- ज़िंदगी का यह पानी क्या है?

यूहन्ना खुद इसका मतलब बताता है,

‘ज़िंदगी के पानी’ से वह रूहुल-कुद्दस की तरफ
इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो
ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक्त तक
नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने
जलाल को न पहुँचा था। (यूहन्ना 7:39)

- यूहन्ना के मुताबिक़ ज़िंदगी का पानी क्या है?

यह आम पानी नहीं है। यह पानी रूहुल-कुद्दस है।

► लेकिन रुहुल-कुदूस क्या है?

अगले आयात में हम रुहुल-कुदूस के बारे में और सीखेंगे। यहाँ यह जानना काफ़ी है कि रुहुल-कुदूस ज़िंदगी का यह पानी है। रुहुल-कुदूस उस वक्त नाज़िल नहीं हुआ था। जब ईसा मसीह को आस-मान पर उठा लिया गया तब ही रुहुल-कुदूस नाज़िल हुआ।

रुहुल-कुदूस फ़रिश्ता नहीं है। वह तसलीस में शामिल है। तसलीस का मतलब यह नहीं कि तीन ख़ुदा हैं। एक ही ख़ुदा है। बाप ख़ुदा है, फ़रज़ंद ख़ुदा है और रुहुल-कुदूस ख़ुदा है। लेकिन ख़ुदा में यह तीनों अलग हैं। जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तब रुहुल-कुदूस हमारे दिलों में आकर बसने लगता है। और चूंकि एक ही ख़ुदा है इसलिए रुहुल-कुदूस के आने से बाप और फ़रज़ंद भी दिल में आ बस्ते हैं।

रुहुल-कुदूस से हम ख़ुदा की मौजूदगी से सेर हो जाते हैं। तब ही हमारे दिल उसकी मुहब्बत और तसल्ली से भर जाते हैं।

► क्या आप प्यासे हैं? क्या आप उस इलाही सेरी के लिए तड़पते हैं जो सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा मसीह रुहुल-कुदूस के ज़रीए दे सकता है?

वही हमारी अबदी ज़िंदगी की गारंटी है। दूसरी बात,

वह मेरे पास आए

► प्यासे को क्या करना है ताकि वह पानी पी सके?

ईसा मसीह फ़रमाता है,

जो प्यासा हो वह मेरे पास आए। (यूहन्ना 7:39)

अमरीका के किसी रेगिस्तान में पानी का अच्छा चश्मा बाक़े है। एक दिन मालूम हुआ कि क़रीब ही किसी औरत की सूखी हुई लाश पड़ी है। उसके पास एक काग़ज़ था। उस पर लिखा था, “हाय! पानी चाहिए, पानी! मैं प्यास से मर रही हूँ।” अफ़सोस, दो मील आगे चश्मा था जिसमें पानी उबल रहा था। कितनी अलमनाक बात। वह पानी के क़रीब ही मर गई थी।

► मेरे दोस्त, क्या आप प्यासे हैं?

चश्मे के पास आओ। वह क़रीब ही है। रेगिस्तान में मत रहना। ज़िंदगी का पानी दस्तयाब है। यह वह पानी है जो खुदा की तरफ से निकलता है। यह वह पानी है जिससे हमें हमेशा की ज़िंदगी मिलती है।

कितने लोग दुनिया में रहते हुए मुरदे हैं।

► किस तरह?

यों कि वह ज़िंदगी के पानी के पास नहीं आए हैं। शायद उनके पास दौलत हो। लेकिन न खुदा की मुहब्बत, न उसकी भरपूर खुशी या तसल्ली उनके दिलों में बसती है। इसलिए वह ज़िंदा हालत में मुरदे हैं।

► क्या आप ज़िंदगी के पानी के प्यासे हैं?

उसके पास आओ। तीसरी बात,

जो ईमान लाए

प्यासा होना ज़रूरी है। लेकिन जो चश्मे के पास न आए वह प्यासा रहता है। और जो उसके पास आए उसके लिए ज़रूरी है कि वह ईमान लाए। उन्नीसवीं सदी में एक जहाज़ बनाम रॉयल चार्टर (Royal Charter) ऑस्ट्रेलिया से खाना होकर इंग्लैंड के क़रीब पहुँचा। खबर आई तो मुसाफिरों के अज़ीज़ बंदरगाह में जहाज़ का इंतज़ार करने लगे। लेकिन वह कभी न पहुँचा। थोड़ी दूरी पर वह तूफान में तबाह हुआ। तकरीबन 450 मुसाफिर ढूब गए। जब किसी की बीवी को बताया गया कि शौहर नहीं बचा तो वह चीख़ उठी, “हाय, घर के इतने क़रीब और फिर भी तबाह!”

मेरे अज़ीज़, जो अल-मसीह के क़रीब आता है लेकिन ईमान नहीं लाता वह उस मुरदे की मानिंद है। उसके बारे में कहा जा सकता है, “घर के इतने क़रीब और फिर भी तबाह!”

दो-चार मुसाफिर तैरते तैरते साहिल पर पहुँच गए। कुछ मुसाफिरों ने ऑस्ट्रेलिया में सोना हासिल किया था, और उन्होंने यह सोना जिस्म से बाँधकर बचने की कोशिश की। लेकिन अफ़सोस—सोना इतना भारी था कि वह तैर न सके और ढूब मरे।

जब आप अल-मसीह के पास आते हैं तो उसे कुछ नहीं दिखा सकते। आप खाली अपने आपको उसके सुपुर्द कर सकते हैं। न सोना न कोई

नेक काम आपको बचाएगा। ईमान का यही मतलब है कि हम खाली अपने आपको उसके सुपुर्द करें और उसे बताएँ, “ऐ मेरे आङ्का, मैं आ गया हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है जो मुझे मंजूर करा सके। न दौलत न अच्छा किरदार न नेक काम। लेकिन तेरा ही फ़ज़ल काफ़ी है। नजात का वह काम काफ़ी है जो तूने मेरी खातिर किया है। तू ही मुझे क़बूल कर। मुझे अपने पानी से सेर कर।”

चौथी बात,

वह पिए

अब हमें प्यास महसूस हुई है। हम खाली हाथ उसके पास आए हैं। हम उस पर ईमान लाए हैं।

► अब क्या?

अब हम पी सकते हैं।

► क्या पी सकते हैं?

ज़िंदगी का पानी। तब रुहुल-कुदूस हमारे अंदर बसेगा और हम सेर हो जाएँगे।

गरज़, चार चीज़ें दरकार हैं : प्यास, उसके पास आना, ईमान लाना और पीना।

तब पानी की नहरें बह निकलेंगी

ईसा मसीह फ्रमाता है कि पाक नविश्तों के मुताबिक़ उसके अंदर से पानी की नहरें बह निकलेंगी।

► इसका क्या मतलब है?

नबियों ने पेशगोई की थी कि अल-मसीह के आने पर यरूशलम से पानी की नहरें बह निकलेंगी। और यह खास पानी होगा। यह ज़िंदगी का पानी होगा। अबदी ज़िंदगी बख्शनेवाला पानी। अब ईसा मसीह फ्रमा रहा है कि मुझसे ही पानी की यह नहरें बह निकलेंगी। मैं ही ज़िंदगी का सरचश्मा हूँ। यही वजह है कि प्यासे उसके पास आते हैं। उस पर ईमान लाते हैं। उसका पानी पीते हैं। और जब हम खूब पानी पीते हैं तो हमसे भी पानी निकलता है।

► किस तरह?

जब हम रुहुल-कुद्स से सेर हो जाते हैं तो वह हमारे अंदर से बहने लगता है।

► इसका क्या मतलब है?

- जब रुहुल-कुद्स का पानी हमें सींचता है तो हमारे मैले दिल धोए जाते हैं।
- जब रुहुल-कुद्स का पानी हमें सींचता है तो हम उसकी पाकी-ज़गी से भर जाते हैं।

- जब रुहुल-कुदूस का पानी हमें सींचता है तो हम रुहानी फल लाते हैं।
- जब रुहुल-कुदूस का पानी हमें सींचता है तो दूसरे हमारे फल से बरकत पाते हैं।
- जब रुहुल-कुदूस का पानी हमें सींचता है तो हमारी आसमानी मनज़िल यक़ीनी है।

मंजूर या मरदूद?

- जो लोग यह बातें सुन रहे थे क्या वह खुश हुए?
नहीं। वह एक बार फिर बहस-मुबाहसा करने लगे कि क्या यह सचमुच अल-मसीह है?
यों उनमें फूट पड़ गई। कुछ उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे। मज़हबी राहनुमाओं ने भी पहरेदार भेज दिए थे ताकि उसे पकड़ें। लेकिन पहरेदार उसके कलाम से इतने मुतअस्सिर हुए कि खाली हाथ वापस आए।
ईसा मसीह के बारे में हमेशा फूट पड़ती है। कुछ उसे क़बूल करते हैं और कुछ उसे रद करते हैं।
- सवाल यह है कि हमने क्या किया? क्या हमने उसे क़बूल किया है? क्या हम प्यासे होकर उसके पास आए हैं। क्या हमने ईमान लाकर ज़िंदगी का यह पानी पी लिया है?

इंजील, यूहन्ना 7:37-52

ईद के आखिरी दिन जो सबसे अहम है ईसा खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। कलामे-मुकद्दस के मुताबिक़ ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी।’” ('ज़िंदगी के पानी' से वह रुहुल-कुद्दस की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न पहुँचा था।)

ईसा की यह बातें सुनकर हुजूम के कुछ लोगों ने कहा, “यह आदमी वाक़ई वह नबी है जिसके इंतज़ार में हम हैं।”
दूसरों ने कहा, “यह मसीह है।”

लेकिन बाज़ ने एतराज़ किया, “मसीह गलील से किस तरह आ सकता है! पाक कलाम तो बयान करता है कि मसीह दाऊद के खानदान और बैत-लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह पैदा हुआ।” यों ईसा की वजह से लोगों में फूट पड़ गई। कुछ तो उसे गिरिफ्तार करना चाहते थे, लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका।

इतने में बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार राहनुमा इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा को लेकर नहीं आए थे, इसलिए राहनुमाओं ने पूछा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?”

पहरेदारों ने जवाब दिया, “किसी ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।”

फ़रीसियों ने तंज़न कहा, “क्या तुमको भी बहका दिया गया है? क्या राहनुमाओं या फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो? कोई भी नहीं! लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़ यह हुजूम लानती है!”

इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था जो कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल उठा, “क्या हमारी शरीअत किसी पर यों फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ है।”

दूसरों ने एतराज़ किया, “क्या तुम भी गलील के रहनेवाले हो? कलामे-मुक़द्दस में तफ़तीश करके खुद देख लो कि गलील से कोई नबी नहीं आएगा।” यह कहकर हर एक अपने अपने घर चला गया।